Dr. Kumari Kiran (Department of Home Science)
Maharaja College, Ara
B.A. Part III (Child Psychology)
Paper – VI (Sc.)

Topic details

Principles of Child Development.

बाल विकास के सिद्धांत

(1) बाल-विकास अवस्थानुसार क्रमबद्ध होता है।

बच्चों का विकास विभिन्न अवस्थाओं से गुजर कर चलता है, जो कि विकास की वृद्धि के एक अवस्था से दूसरे अवस्था में क्रम के द्वारा पहचाना जा सकता है। जिसे निम्नलिखित छः अवस्थाओं में बाँटा गया है।

1. गर्भावस्था 2. शैशवावस्था 3. बचपन
4. बाल्यावस्था 5. वयःसन्धि 6. किशोरावस्था

गर्भावस्था में भी डिम्बावस्था, भ्रूणावस्था, गर्भस्थ तथा शैशवावस्था में बाँटा जाता है। प्रत्येक अवस्था में विकास अलग-अलग होता है। निषेचन डिम्ब रहता है, फिर अंगो के निर्माण हेतु वे अलग-अलग भाग में विभाजित होते हैं, जिसके बाद सभी अंगों का अलग-अलग विकास होता है। प्रारम्भ के 2 वर्ष वह पूर्णतः दूसरों पर आश्रित होता है फिर धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता है। बाल्यावस्था में बच्चा अपने को सामाजिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण में समायोजित करता है। जिसमें खिलौना समूह प्रवृति आदि विशिष्ट प्रवृतियाँ आती है, बच्चे परिवार, मित्र एवं स्कूल के माध्यम से जीवन की वास्तविकताओं से अवगत होते हैं। प्रारम्भ में ही यौनांगों का विकास होता है, फिर किशोरावस्था में शरीर और मन अनियंत्रित होने के कारण अनेक समस्याओं से गुजरता है। इसके बाद प्रौढ़ावस्था आती है, जिसमें कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों और उपलब्धियों के साथ जीवन पथ पर पड़ने वाली परिस्थितियों से जूझने एवं समायोजन करने का अनुभव प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner

(2) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है

किसी भी बच्चे में सर्वप्रथम सामान्य क्रियाओं का विकास होता है फिर विशिष्ट क्रियाओं का। बच्चे आरंभ में गेंद को पकड़ने के लिए सम्पूर्ण अपनी शरीर को हिलाता है, परन्तु कुछ बड़ा होने के बाद हाथ से पकड़ता है। इसी तरह की शारीरिक क्रियाएं एवं मानसिक क्रियाओं का सामान्य रूप ही बाद में विशिष्ट रूप धारण कर लेता है।

(3) विकास का एक निश्चित क्रम होता है

यह विकास मुख्यतः दो प्रकार से होता है।

a.) मस्तकाधोमुखी →

विकास सिर से आरम्भ होकर पैरों की तरफ जाता है। सर्वप्रथम सिर, फिर हाथ, छाती व नीचे धड़ का विकास होता है। जन्म के समय बच्चे का सिर विकसित होता है, जबकि सिर अधिक।

b.) केन्द्र से बाहर की ओर →

शारीरिक विकास शरीर के केन्द्र से परिधि की ओर जाता है। शरीर के अन्दर सर्वप्रथम आन्तरिक अवयवों का विकास होता है। पुनः बाहरी अंगों का विकास होता है।

(4) विकास एवं सह-सम्बन्ध

विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सह-सम्बन्ध मिलता है, प्रायः शारीरिक तथा मानसिक विकास सह-सम्बन्धित होता है। इसी प्रकार सामाजिक विकास के साथ-साथ नैतिक विकास भी होता है। अतः विकास का प्रत्येक पहलू एक-दूसरे से सह-सम्बन्धित होता है—

Scanned with CamScanner

(5) सामान्य विकास के लिए आरम्भ से ही प्रयास किये जाने चाहिए

यदि किसी कारण वश प्रारम्भिक स्तर पर बालक विकास पिछड़ जाता है, तो बाद में वह सामान्य विकास को प्राप्त नहीं कर पाता है। इन बच्चों का भविष्य में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा इन्हें बाद कुछ निर्धारित समय पर प्राप्त न होकर देर से प्राप्त होता है।

(6) विकास की वैयक्तिक भिन्नताओं द्वारा की व्याख्या की जा सकती है—

प्रत्येक बच्चे का विकास समान्य रूप से नहीं होता है बल्कि उनमें अन्तर होता है। किसी का विकास तेज गति से होता है, जबकि कुछ बच्चे धीरे-धीरे विकसित होते। व्यवहारिकता तथा बौद्धिकता के स्तर पर भी यही लागू होता है। इसी आधार पर बच्चे औसत तेज एवं मन्द विकास वाले होते हैं—

(7) विकास की अवस्था सन्तुलित और असन्तुलित होती है

सन्तुलित विकास से तात्पर्य उस अवस्था से होता है, जिसमें बच्चा अच्छी तरह से समायोजित कर जाता है, जब कि असन्तुलित विकास की अवस्था में बच्चों में तनाव, असुरक्षा, अनिर्णय आदि की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं—

(8) विकास की गतियों में अन्तर होता है

विकास प्रक्रिया की गति, भिन्न-भिन्न पक्षों पर अलग-अलग होती है। इसी कारण से शरीर के कुछ अंग अन्य अंगों के अपेक्षा अधिक विकसित हो जाती है। बचपन का विकास अपने विशिष्ट सिद्धान्तों के अनुरूप होता है। अध्ययनों से स्पष्ट निष्कर्ष सामने आये हैं कि सृजनशीलता, कल्पना आदि का विकास बचपन में प्रारम्भ हो जाता है, किशोरावस्था विकास की चरमावस्था होती है। अतः बचपन से विकास का एक सिद्धान्त होता है।

(9) विकास की प्रक्रिया निरन्तर होती है

विकास प्रक्रिया में सततता पाई जाती है, जो गर्भावस्था से प्रारम्भ होकर तमाम उम्र चलती है, परन्तु इसकी गति में अन्तर पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

बचपन मे विकास तेज गति से होता है; जब कि धीरे - धीरे कम होता चला जाता है।

(10) विकास तथा आयु मे लैंगिक अन्तर विद्यमान रहता है-

लड़के एवं लड़कियों के विकास की दर मे बचपन मे अन्तर पाया जाता है। ऐसा देखा जाता है कि लड़को की अपेक्षा बचपन से ही लड़कियों से अधिक होती है। 10 वर्षों मे लड़को की अपेक्षा लड़कियाँ कम वजन की होती है। 10-14 वर्ष की लड़कियाँ लड़कों से अधिक वजन वाली होती हैं मानसिक स्तर मे भी दोनो मे भिन्नता पाई जाती है।

(11) परिपक्वता एवं अधिगम के परिणाम से विकास-

बच्चो के व्यवहार मे परिवर्तन का कारण शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता होती है जो आयु से जुड़ी होती है। परिपक्वता से तात्पर्य बच्चो की वंशानुक्रम से जुड़ी शारीरिक क्षमताओं का विकास है। परिपक्वता, बच्चे के व्यवहार के सामान्य प्रतिमानो को निश्चित करती है।

(12) विकास अवस्था से जुड़ी विशिष्ट स्वाभाविक गुण तथा लक्षण है

विभिन्न आयु स्तर पर होने वाले विकास प्रतिमानो के अपने विशिष्ट स्वाभाविक गुण होते है। इन विशिष्ट लक्षणो की जानकारी बच्चो के गुणो को समझने मे सहायक होती है इसमें कुछ असामान्य परिवर्तन भी होते हैं जिस कारण बच्चो की मनःस्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः प्रत्येक आयु मे होने वाले ऐसे स्वाभाविक लक्षणो के लिए बालकों की समायोजन कर सहायता दी जानी भी जरूरी है।